विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 17-01—2021

वर्ग पंचम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

वचन

संस्कृत में तीन वचन होते हैं- एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन।

संख्या में एक होने पर एकवचन का, दो होने पर द्विवचन का तथा दो से अधिक होने पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- एक वचन - एकः बालक: क्रीडति।

द्विवचन - द्वौ बालकौ क्रीडतः।

बहुवचन - त्रयःबालकाः क्रीडन्ति।

लिंग

पुल्लिंग- जिस शब्द में पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुलिंग कहते हैं।(जैसे रामः, बालकः, सः आदि)

स: बालकः अस्ति।

तौ बालकौ स्तः

ते बालकाः सन्ति।

स्त्रीलिंग- जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। (जैसे रमा, बालिका, सा आदि)

सा बालिका अस्ति।

ते बालिके स्तः।

ताः बालिकाःसन्ति।

नपुंसकलिंग (जैसे: फलम् , गृहम, पुस्तकम , तत् आदि)

पुरुष

प्रथम पुरुष (First person) – सः, तौ, ते

मध्यम पुरुष (Second person) – त्वम्, युवाम्, यूयम्

उत्तम पुरुष (Third person) – अहं, आवाम्, वयम्

कारक

कारक नाम - वाक्य के अन्दर उपस्थित पहचान-चिह्न

कर्ता - ने (रामः गच्छति।)

कर्म - को (to) (बालकः विद्यालयं गच्छति।)

करण - से (by), द्वारा (सः हस्तेन खादति।)

सम्प्रदान -को के लिये (for) (निर्धनाय धनं देयं।)

अपादान - से (from) अलगाव (वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।)

सम्बन्ध - का, की, के (of), रा, री, रे, ना, नी, ने, (रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।)

अधिकरण - में, पे, पर (in/on) (यस्य गृहे माता नास्ति,)

सम्बोधन - हे,भो,अरे, (हे राजन् ! अहं निर्दोषः।)

वाच्य

संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य में कर्तापद प्रथमा विभक्ति का होता है। छात्रः श्लोकं पठति- यहाँ छात्रः कर्ता है और प्रथमा विभक्ति में है।

कर्मवाच्य में कर्तापद तृतीया विभक्ति का होता है। जैसे, छात्रेण श्लोकः पठ्यते। यहाँ छात्रेण तृतीया विभक्ति में है।

अकर्मक धातु में कर्म नहीं होने के कारण क्रिया की प्रधानता होने से भाववाच्य के प्रयोग सिद्ध होते हैं। कर्ता की प्रधानता होने से कर्तृवाच्य प्रयोग सिद्ध होते हैं। भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में क्रियारूप एक जैसे ही रहते हैं।

क्र	कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1.	भवान् तिष्ठतु	भवता स्थीयताम्
2.	भवती नृत्यतु	भवत्या नृत्यताम्
3.	त्वं वर्धस्व	त्वया वर्ध्यताम्
4.	भवन्तः न सिद्यन्ताम्	भवद्भिः न खिद्यताम्
5.	भवत्यः उत्तिष्ठन्तु	भवतीभिः उत्थीयताम्
6.	यूयं संचरत	युष्माभिः संचर्यताम्
7.	भवन्तौ रुदिताम्	भवद्भयां रुद्यताम्
8.	भवत्यौ हसताम्	भवतीभ्यां हस्यताम्
9.	विमानम् उड्डयताम्	विमानेन उड्डीयताम्
10	सर्वे उपविशन्तु	सर्वैः उपविश्यताम्